इकाई 3 सामाजिक समस्याएँ : भारतीय संदर्भ में

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 सामाजिक रूपांतरण और समस्याएँ

- 3.2.1 सामाजिक समस्याएँ : ऐतिहासिक चरण
- 3.2.2 सामाजिक समस्याएँ : समकालीन चरण
- 3.2.3 संरचनात्मक रूपांतरण और सामाजिक समस्याएं
- 3.2.4 संरचनात्मक पतन और असंगतियाँ
- 3.2.5 नरम राज्य

3.3 सामाजिक कारक और सामाजिक समस्याएँ

- 3.3.1 प्रमुख सामाजिक कारक

3.4 भारतीय जनसंख्या की विजातीयता

- 3.4.1 धर्म
- 3.4.2 जाति
- 3.4.3 भाषा
- 3.4.4 जनजातियाँ
- 3.4.5 अल्पसंख्यक
- 3.4.6 जनसंख्या विस्फोट

3.5 सांस्कृतिक तत्व

- 3.5.1 भाग्यवाद
- 3.5.2 विशिष्टतावाद
- 3.5.3 सार्वजनिक संपत्ति के प्रति दृष्टिकोण
- 3.5.4 पितृसत्तात्मक व्यवस्था

3.6 अर्थव्यवस्था, गरीबी और शिक्षा

- 3.6.1 बाल श्रमिक
- 3.6.2 निरक्षरता और शिक्षा
- 3.6.3 शिक्षा प्रणाली
- 3.6.4 औद्योगीकरण और शहरीकरण

3.7 राज्य और राज्य व्यवस्था

- 3.7.1 निर्वाचन प्रक्रिया

3.8 सारांश

3.9 शब्दावली

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का पूरी तरह से अध्ययन करने के बाद आप निम्नलिखित बातों के विषय में समर्थ होंगे :

- भारतीय संदर्भ में सामाजिक रूपांतरण और सामाजिक समस्याओं के संबंधों का इतिहासगत बोध;
- संरचनात्मक रूपांतरण तथा सामाजिक समस्याओं के परस्पर संबंध का वर्णन;
- सामाजिक कारकों और सामाजिक समस्याओं के संबंध का स्पष्टीकरण; तथा
- भारत में इन समस्याओं को निपटाने के लिए राज्य के हस्तक्षेप के स्वरूप का इंगितीकरण।

3.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम "सामाजिक समस्याएँ – भारतीय संदर्भ में" पर चर्चा करना चाहेंगे। भारतीय समाज में कुछ अनूठी विशेषताएँ हैं। आज भी भारतीय समाज अपने सुदूर अतीत से किसी न किसी रूप में निरंतरता बनाए हुए हैं। भारतीय समाज के आरंभिक काल में वर्णाश्रम, जाति, संयुक्त परिवार प्रणाली और ग्राम समुदाय जैसी सामाजिक संस्थाओं का उदय हुआ जो आधुनिक युग में भी बहुत सी सामाजिक समस्याओं के लिए उत्तरदायी हैं। भारत अति प्राचीन काल से ही एक बहु धर्मावलंबी, बहु भाषा-भाषी, तथा बहु क्षेत्रीय समाज रहा है। भारतीय समाज की इन विविधताओं ने महत्वपूर्ण सांस्कृतिक योगदान किया है और ये विविधताएँ ही भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की शक्ति का स्रोत है। किंतु इसके साथ ही इन विविधताओं ने भारतीय समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक एकता के क्षेत्र में अनेक चुनौतियों को भी जन्म दिया है।

3.2 सामाजिक रूपांतरण और सामाजिक समस्याएँ

हम इस पाठ्यक्रम की इकाई 1 में सामाजिक रूपांतरण और सामाजिक समस्याओं के बीच सैद्धांतिक संबंधों पर चर्चा कर चुके हैं। इस इकाई में, इस संबंध को भारत के विशेष संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।

इस संदर्भ में सामाजिक रूपांतरण और उनका सामाजिक समस्याओं से संबंधों के निम्नलिखित पहलुओं को ध्यान में रखना होगा :

- ऐतिहासिक, और
- सरंचनात्मक।

सामाजिक रूपांतरण और उसका सामाजिक समस्याओं के संबंधों के इतिहासगत बोध को निम्नलिखित दो भागों में बाँटा जा सकता है :

- विभिन्न ऐतिहासिक कालों अर्थात प्राचीन, मध्ययुगीन और आधुनिक (19वीं शताब्दी तक) काल के माध्यम से सामाजिक समस्याओं की समझ,
- समकालीन सामाजिक समस्याएँ।

3.2.1 सामाजिक समस्याएँ : ऐतिहासिक चरण

भारतीय समाज एक प्राचीन सभ्यता का अंग होने के कारण, विभिन्न ऐतिहासिक कालों से होकर गुजरा है। भारत में वैदिक काल ने भारत में एक ऐसी सभ्यता का बीज बोया जिसकी विशेषता अत्यंत समुन्नत दर्शन, ज्योतिष विज्ञान और औषधि विज्ञान हैं। इसका संस्थागत

आधार वर्णाश्रम और जाति, धार्मिक अनुष्ठानों पर जोर, अनुष्ठानकर्ताओं की अन्य लोगों की तुलना में उच्च स्थिति तथा पशुओं की बलि चढ़ाने के इर्द-गिर्द केंद्रित था। भारतीय सभ्यता के आरंभिक चरण में प्रमुख सामाजिक समस्याएँ निम्नलिखित थीं :

- दो प्रमुख सामाजिक समूहों अर्थात आर्य और दास अथवा दस्यु के बीच पारस्परिक संघर्ष जैसा कि वैदिक ग्रंथों में वर्णित है।
- सामाजिक वर्गीकरण के पालन पर जोर।
- अनुष्ठान सम्पन्न करने पर बल।
- पशुओं की बलि चढ़ाना।

जैन धर्म और बौद्ध धर्म इन प्रथाओं के विरोध में उभरे थे। यह ध्यान देने योग्य बात है कि वैदिक और उत्तर वैदिक युग में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति काफी ऊँची थी। इस युग में बाल विवाह आमतौर पर नहीं होते थे।

भारत का इस्लाम से संपर्क संघर्ष, क्रमिक अभियोजन, बढ़ता समन्वय और सांप्रदायिक वैमनस्य की पुनरावृत्ति के विभिन्न चरणों से होकर गुजरा है। मुस्लिम शासन के अभ्युदय के साथ भारत में दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ परिलक्षित होती हैं :

i) पहली प्रवृत्ति बढ़ती हुई अंतर्मुखनिता तथा अन्य लोगों के प्रति दूरी बनाए रखने की थी।

इससे शुचिता और प्रदूषण की धारणा तथा छुआछूत की प्रथा को बल मिला। इस युग में समुद्र यात्रा पर कठोर प्रतिबंध लगाए गए। फलस्वरूप भारतीयों में सर्वप्रथम तो उद्यम तथा साहसिक कार्य की भावना में कमी आई। द्वितीय स्तर पर बाहरी विश्व के साथ भारतीयों का संपर्क भी कम हुआ।

ii) आक्रमणों और संघर्षों के प्रारंभिक चरण में हिंदुओं में सती प्रथा और बाल विवाह की शुरुआत एक प्रकार से आत्म सुरक्षात्मक विधि के रूप में हुई। मुस्लिम जनसंख्या का केवल थोड़ा-सा भाग अफगानिस्तान, ईरान, तुर्की और अरब देशों से भारत में आप्रवासित हुआ था। शेष वे स्थानीय लोग थे जिन्होंने इस्लाम को स्वीकार कर लिया। हिंदुओं के संपर्क में आने तथा धर्म परिवर्तन के कारण भारत में मुसलमानों पर जाति प्रथा का प्रभाव पड़ा। इस प्रकार सामाजिक ऊंच-नीच विभाजन भारत के मुसलमानों में भी शुरू हो गया।

iii) दूसरे प्रकार की प्रवृत्ति अभिजनों तथा ऊँची जाति के हिंदुओं के एक वर्ग द्वारा मुसलमान शासकों के रीति-रिवाजों का अनुकरण के रूप में दिखाई पड़ती है। इसे उत्तर भारत में ऊँची जाति की महिलाओं में परदा प्रथा को प्रोत्साहन मिला।

मध्ययुग में भक्ति आंदोलन ने समता का संदेश देकर तथा धार्मिक कर्मकाण्डों, जाति प्रथा एवं छुआछूत के विरुद्ध आवाज़ उठाकर भारतीय सभ्यता के मानवतावादी तत्वों को फिर से बलशाली किया। छुआछूत, बाल विवाह, सती प्रथा और शिशु हत्या, संगठित रूप से ठगी जैसी प्रथाओं में भारतीय समाज में विशेषकर मुगल साम्राज्य के पतनोन्मुख काल में भरपूर वृद्धि हुई। धार्मिक विश्वासों ने भी तंबाकू, गांजा और अफीम के नशे को भारत के कुछ हिस्सों और वर्गों में प्रोत्साहित किया।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभिक काल तक भारत में औपनिवेशिक शासन पूर्णतः स्थापित हो चुका था। 1820 के बाद इस शासन ने सुधारवादी रुख अपनाया। इस अवधि में बड़े पैमाने पर प्रचलित सती और ठगी प्रथाओं के उन्मूलन के लिए अनेक सामाजिक सुधार कार्यक्रम तैयार किए।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में सती, विधवा विवाह, आधुनिक शिक्षा का प्रसार, बाल विवाह तथा छुआछूत की बुराइयों जैसी सामाजिक समस्याओं से संबंधित प्रश्न समाज सुधारकों द्वारा उठाए गए।

उन्नीसवीं शताब्दी में चार प्रमुख सुधार आंदोलन चलाए गए।

- राजा राममोहन राय के नेतृत्व में चलाया गया ब्रह्म समाज,
- स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा प्रतिपादित आर्य समाज,
- महादेव गोविंद रानाडे द्वारा चलाया गया प्रार्थना समाज,
- रामकृष्ण परमहंस की प्रेरणा से स्वामी विवेकानंद द्वारा चलाया गया रामकृष्ण मिशन।

इन सुधार आंदोलनों ने छुआछूत, सती, शिशु हत्या जैसी प्रथाओं का विरोध किया तथा विधवा पुनर्विवाह और आधुनिक शिक्षा का प्रचार किया। राजा राममोहन राय के अथक प्रयासों से सती प्रथा को सन् 1829 में कानूनी तौर पर समाप्त कर दिया गया। आर्य समाज ने पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जाति प्रथा की कठोरता को कमजोर करने तथा छुआछूत की प्रथा को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रार्थना समाज के कार्यकलाप मुख्यतया बंबई प्रेसीडेंसी तक ही सीमित थे। रामकृष्ण मिशन ने शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया।

3.2.2 सामाजिक समस्याएँ : समकालीन चरण

आज के भारत की सामाजिक समस्याएं हैं। हालांकि इन्हें सामाजिक समस्याएं कहा जाता है परन्तु कुछ समस्याएं सामाजिक सांस्कृतिक हैं तो कुछ आर्थिक और वैधानिक। इसलिए समकालीन सामाजिक समस्याओं को निम्नलिखित कोटियों में विभाजित किया जा सकता हैः

i) **सामाजिक-सांस्कृतिक समस्याएंः** साम्प्रदायिकता, अस्पृश्यता जनसंख्या विस्फोट, बाल शोषण, अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति, पिछड़े वर्ग, महिलाएं, यद्यपान और नशापान की समस्याएं।

ii) **आर्थिक समस्याएंः** गरीबी, बेरोज़गारी, काला धन।

iii) **वैधानिक समस्याएंः** अनाचार, हिंसा और आतंकवाद।

यह वर्गीकरण केवल समझाने की सुविधा के लिए किया गया है। ये सब एक दूसरे से गहरे रूप में जुड़े हुए हैं। ग़रीबी आर्थिक के साथ-साथ सामाजिक समस्या भी है। इसी प्रकार समुदायवाद का भी आर्थिक कारकों से गहरा रिश्ता है। अपराध और अनाचार वैधानिक मामले हैं परंतु ये सामाजिक और आर्थिक कारकों से भी जुड़े हैं।

भारतीय समाज में पहले भी विलिना चरणों में सामाजिक समस्याओं के खिलाफ सामाजिक आंदोलन आयोजित किए जाते रहे हैं। इसी प्रकार आज भी समुदायवाद, जातिवाद, छुआछूत, निरक्षरता मद्यपान और नशापान के खिलाफ सामाजिक और आर्थिक आंदोलन चलाए जा रहे हैं। 1919 में गांधी जी राष्ट्रीय आंदोलन के नेता बनकर उभरे। उन्होंने हरिजनों आदिवासियों और महिलाओं को ऊपर उठाने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम बनाया। उन्होंने शिका और ग्रामीण उद्योग को भी पुनर्संगठित करने का प्रयास किया। उन्होंने समुदायवाद छुआछूत और मद्यपान के खिलाफ लड़ाई लडी।

समकालीन युग में महिलाओं, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, पिछड़ी जातियों और मज़दूरों के हितों की रक्षा के लिए आंदोलन चलाए गए। पर्यावरण ह्रास, नशे की लत और भारत में बच्चों के शोषण के खिलाफ कई स्वयंसेवी संस्थाएं काम कर रही हैं।

3.2.3 संरचनात्मक रूपांतरण और सामाजिक समस्याएँ

संरचनात्मक रूपांतरण के संदर्भ में भारतीय सामाजिक समस्याओं को समझने के कतिपय प्रयास किए गए हैं। भारतीय संदर्भ में रूपांतरण के तीन रूप उपलब्ध हैं।

- संस्कृतिकरण,
- पश्चिमीकरण, और
- आधुनिकीकरण।

संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसमें निम्न जातियां उच्च जातियों के अनुष्ठानों और रीति रिवाज का अनुकरण कर या फिर रोमांचक ढ़ंग से समाज के ऊपरी पायदान पर पहुँच जाते हैं। यह एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है परन्तु सामाजिक हैसियत और पेशे में संस्कृतिकरण के कारण आया उच्च स्तरीय बदलाव भी एक संरचनात्मक प्रक्रिया है।

पश्चिम और खासतौर पर इंगलैंड के सम्पर्क में आने पर भारत में रूपांतरण की रेल चल पड़ी जिसे पश्चिमीकरण के नाम से जाना जाता है। इसमें प्रशासन कानून और शिक्षा पर पश्चिम और अंग्रेज़ी भाषा का प्रभाव स्पष्ट है। पश्चिमी जीवनशैली के प्रभाव में शिक्षित और शहरी भारतवासियों के एक बड़े हिस्से में खानपान, पहनावा, बोली और आदतों को पश्चिम शैली में ढ़ाल लिया। पश्चिम के अनुकरण से पश्चिमी लोकतंत्र के मूल्य औद्योगिकरण और पूंजीवाद का समावेश हुआ। पश्चिमीकरण का सांस्कृतिक के साथ-साथ संरचनात्मक आयाम भी है। औपनिवेशिक प्रशासन के तहत शहरी केन्द्रों का उदय हुआ। आधुनिक शिक्षा अर्थव्यवस्था के उद्योग से रोज़गार जुड़े तथा शिक्षा प्रशासन, न्यायपालिका और प्रेस के प्रभाव से शहरी मध्यवर्ग का उदय हुआ। ये सब संरचनात्मक परिवर्तन थे। जैसा कि हम पहले बता चुके हैं भारतीय संदर्भ में आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण का गहरा आपसी रिश्ता है। औपनिवेशिक प्रशासन में शिक्षा राजनीतिक भागीदारी, शहरीकरण, देशांतरण, गत्यात्मकता, मुद्रा, बाज़ार, आधुनिक प्रौद्योगिकी, संचार के माध्यम और औद्योगिकरण जैसे आधुनिकीकरण को प्रमुख घटकों को मुहैया करवाया। आज़ादी के बाद इनमें और भी तेजी आई। आज़ाद भारत ने आधुनिक संविधान अपनाया। धर्म निर्पेक्ष लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना की और नियोजित सामाजिक-आर्थिक विकास की नीति अपनाई, लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण किया और गरीब तबकों के लिए संरक्षणात्मक भेदभाव की नीति अपनाई।

असल सवाल यह है कि भारत में इन संरचनात्मक रूपांतरणों से किस प्रकार की सामाजिक समस्याएं पैदा हुई? भारतीय समाज में अन्तर्विरोधों के बावजूद मार्क्स द्वारा परिभाषित और इकाई 1 में व्याख्याति क्रांति भारत में नहीं हुई। संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण के रूप में रूपांतरण की यह प्रक्रिया कमोबेश भारतीय संदर्भ में बना किसी रूकावट के धीरे-धीरे होता चला गया।

3.2.4 संरचनात्मक पतन और असंगतियाँ

निम्नलिखित दो अवधारणाएँ संरचनात्मक रूपांतरण और सामाजिक समस्याओं के बीच में संबंधों को समझने में सहायक होंगी :

- संरचनात्मक विगठन, और
- संरचनात्मक असंगतियाँ।

संरचनात्मक विगठन की अवधारणा का प्रयोग टालकॉट पारसन्स द्वारा किया गया है। उनके अनुसार इसका अभिप्राय प्रणाली जन्य ऐसी कठोरता से है जो सामाजिक रूपांतरण का प्रतिरोध करने या उसमें बाधा डालने का प्रयास करती है। इससे प्रणाली विगठन उत्पन्न होता है। तीसरी दुनिया के देशों में स्वातंत्र्योत्तर काल में आधुनिकीकरण के प्रति बढ़ती हुई ललक रही है। इन देशों ने अर्थव्यवस्था, औद्योगीकरण, आधुनिकी प्रविधि, साक्षरता और विवेकशीलता, नागरिक संस्कृति और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के संरचनात्मक आधार के बिना ही संसदीय लोकतंत्र, वयस्क मताधिकार, आधुनिक संविधान की अवधारणाओं को पश्चिम से उधार लेकर अपनाया। परिणामस्वरूप उन देशों में लोकतंत्र सफल न हो सका जो पहले उपनिवेश रहे चुके थे। नृजातीय, सांप्रदायिक, जनजातीय, क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाएँ इन देशों में इतनी शक्तिशाली हो चुकी हैं कि वे लोकतंत्र, आधुनिक राष्ट्र राज्य और नागरिक समाज की आधारभूत संरचना का भी क्षरण कर रही हैं। ऐसा भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका और अफ्रीका के अन्य देशों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगत हो रहा है। भारतीय समाज में सामाजिक रूपातरण का प्रभाव निम्नलिखित रूप में दिखाई देता है :

- एक ओर तो रूपांतरण के तीन प्रतिमानों ने सामंजस्य की नई समस्याएँ पैदा की हैं जिनकी चर्चा पहले की जा चुकी है।

- वहीं दूसरी ओर समय-समय पर सामाजिक रूपांतरण की प्रक्रिया का प्रतिरोध भी हुआ है। इस संदर्भ में हम अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की अर्ध सामाजिक गतिशीलता की आकांक्षा के प्रतिरोध, महिलाओं के अधिकार के समुचित दावों की अस्वीकृति एवं सही अथवा गलत किसी तरह से भी भूमि सुधार के कार्य में बाधा उत्पन्न करने के उदाहरण दे सकते हैं।

  भारतीय संदर्भ में संरचनात्मक असंगतियाँ भी दिखाई देती हैं। ये सामाजिक विघटन और सामाजिक समस्याओं के लक्षण और कारण दोनों हैं। असंगतियों का अर्थ यह है कि एक ही संरचना के अंतर्गत दो विपरीत उप संरचनाओं का होना, जो कि एक दूसरे के संगत न हों। एक ओर तो भारत में अतिपरिष्कृत और आधुनिक महानगरीय उच्च तथा उच्च मध्यम वर्ग हैं जो उपभोक्तावाद से प्रभावित है। दूसरी ओर, भारत में बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं, जो आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। जहाँ आसानी से पहुँचा भी नहीं जा सकता और जिन्होंने रेलगाड़ी तक भी नहीं देखी होगी। भारतीय समाज का एक छोटा वर्ग जेट युग में रहता है जबकि भारत की एक बड़ी जनसंख्या आज भी बैलगाड़ी पर निर्भर है। यह स्थिति धनी और निर्धन, ग्रामीण और नगरीय लोगों के बीच अंतर होने का स्पष्ट सूचक है जिससे विभिन्न समूहों और स्तरों के बीच खाई पैदा होती है। ये संरचनात्मक असंगतियाँ भारतीय समाज में विद्यमान गरीबी, असमानता, दुर्गमता तथा वंचकता की सूचक हैं।

3.2.5 नरम राज्य

गुन्नार मिर्डाल ने अपनी पुस्तक "एशियन ड्रामा" में भारत सहित एशिया के अनेक देशों में आधुनिकीकरण से उत्पन्न समस्याओं के विषय में उल्लेख किया है। उनका मानना है कि शक्तिशाली राज्य, प्रभावी सरकार एवं कठोर निर्णय लेने तथा अपने देश के कानून को सख्ती से लागू करने की उनकी क्षमता आधुनिक यूरोपीय समाज की प्रमुख विशेषताएँ हैं किंतु आमतौर पर दक्षिण एशियाई देशों में और विशेषकर भारत में स्वातंत्र्योत्तर काल में शासकीय अभिजन द्वारा एक ऐसे पथ का अनुकरण किया जा रहा है जिसे मिर्डाल ने नरम राज्य की नीति की संज्ञा दी है। राजनीति के लोकतांत्रीकरण ने इस नीति को और भी मज़बूत किया है। इसने राष्ट्र राज्य को अपने देश के कानून को लागू करने की क्षमता को

कमजोर किया है। परिणामस्वरूप अपराध, हिंसा, आतंकवाद, कानून के उल्लंघन, राजनीतिक जीवन में भ्रष्टाचार और राजनीति के अपराधीकरण में काफी बढ़ोत्तरी हुई है।

बोध प्रश्न 1

i) भारत के निम्नलिखित ऐतिहासिक अवस्थाओं में प्रमुख सामाजिक समस्याओं का वर्णन करें।

क) प्राचीन

.....

.....

.....

.....

.....

ख) मध्ययुगीन

.....

.....

.....

ग) आधुनिक

.....

.....

.....

.....

घ) समकालीन

.....

.....

.....

.....

ii) उन्नीसवीं शताब्दी के चार प्रमुख सुधार आंदोलनों के नाम बताएँ :

क) .....

ख) .....

ग) .....

घ) .....

iii) भारत में रूपांतरण के तीन प्रमुख रूप बताएँ :

क) .....

ख) .....

ग) .....

3.3 सामाजिक कारक और सामाजिक समस्याएँ

सामाजिक समस्या एक ऐसी स्थिति है जो किसी समाज विशेष में वस्तुपरक रूप में विद्यमान रहती है और वह समाज आंतरिक रूप से उस समस्या को वांछनीय मानता है। अतः सामाजिक समस्या समाज सापेक्ष है या उसका एक सामाजिक संदर्भ होता है। इसलिए सामाजिक समस्याओं के अध्ययन के लिए उनके सामाजिक संदर्भों को समझना अपेक्षित है।

सामाजिक संदर्भ पर चर्चा ऐतिहासिक या संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य में की जा सकती है। इससे पहले हमने यह स्पष्ट किया है कि भारत में विभिन्न ऐतिहासिक अवस्थाओं में किस प्रकार से विभिन्न प्रकार की सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। अब हम विभिन्न समस्याओं से जुड़े प्रमुख सामाजिक कारकों को समझने का प्रयास करेंगे।

3.3.1 प्रमुख सामाजिक कारक

भारत की सामाजिक समस्याओं – भारतीय समाज में उनके उत्पन्न होने तथा बने रहने के अध्ययन के लिए भारत की उन सामाजिक स्थितियों को समझना अपेक्षित है जिनमें उन समस्याओं का अस्तित्व बना रहता है। जहाँ तक सामाजिक समस्याओं का संबंध है, भारत में सामाजिक संदर्भ के अंग बनने वाले कुछ प्रमुख कारक निम्न प्रकार हैं :

- भारतीय जनसंख्या की विजातियाँ,
- सांस्कृतिक तत्व,
- अर्थव्यवस्था, निर्धनता और शिक्षा,
- राज्य और राजनीतिक व्यवस्थाए
- नगरीकरण और औद्योगीकरण।

3.4 भारतीय जनसंख्या की विजातीयता

भारत एक विजातीय समाज है – जहाँ अनेक धर्म, जातियाँ एवं भाषायी और जनजातीय समूह हैं। भारतीय जनसंख्या का यह विजातीय स्वरूप भारत में बहुत सी सामाजिक समस्याओं का कारण रहा है।

3.4.1 धर्म

समाज के बहु-धर्मावलंबी स्वरूप तथा विभिन्न धर्मों के बीच होने वाले संघर्ष से भारत में सांप्रदायिक समस्याओं को बढ़ावा मिला है। भारत में संप्रदायवाद – अंतर्धार्मिक समूहों के विकृत संबंधों के रूप में – विशेष रूप से हिंदुओं और मुसलमानों के बिगड़े संबंधों के रूप में, एक गंभीर समस्या है। यह समस्या ऐतिहासिक दृष्टि से भारत में मुसलमानों के

आक्रमण, हिंदुओं और मुसलमानों के बीच प्रारंभिक संघर्ष, ब्रिटिश शासन और सांप्रदायिक विभाजन को प्रोत्साहित करने की उनकी नीति, राजनीतिक सत्ता, सेवा और संसाधनों के लिए स्पर्धा क्रे साथ जुड़ी हुई है।

धीरे-धीरे संप्रदायवाद की समस्या ने हिंदू और सिखों के संबंधों को भी प्रभावित किया है। भारत में एक बड़ी संख्या में सिख रहते हैं। उनकी अधिकांश आबादी देश के अपेक्षाकृत विकसित क्षेत्र पंजाब में है। पंजाब में सांप्रदायिक राजनीति और आगे चलकर आतंकवाद का उदय किस प्रकार हुआ, इसे समझने के लिए इस क्षेत्र (पंजाब) में शक्तिशाली समुदाय के रूप में तथा समूचे राष्ट्र में अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में उनके होने जैसे तथ्य पर ही विचार करना समीचीन होगा। इस संदर्भ में इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि पंजाब में हिंदुओं और सिखों में आतकंवाद के कुहासे में भी काफी समझदारी और मैत्री भाव दिखाया है। धर्मनिरपेक्षता की भारतीय अवधारणा में सभी धर्मों को समान माना जाता है और एक धर्म का दूसरे धर्म से कोई भेद नहीं होता है। जैसा कि मिर्डाल ने कहा है, "ढुलमुल नीति वाले राज्य" की नीति ने और सांप्रदायिक संगठनों के विरुद्ध कठोर निर्णय न लेने की प्रवृत्ति ने भी भारत में संप्रदायवाद की समस्याओं को बढ़ावा दिया है। धर्म का प्रयोग करके चुनाव जीतने के पक्ष पर ध्यान केंद्रित करने से भी भारत में स्वातंत्र्योत्तर काल में सांप्रदायिकता में वृद्धि हुई है।

3.4.2 जाति

भारतीय सामाजिक ढाँचे का दूसरा तत्व जाति प्रणाली है। जाति प्रणाली ने भारतीय समाज को बहुत से समूहों में बाँट दिया है जिससे उनके बीच विभिन्न प्रकार से और विभिन्न अंशों में सबंधों पर प्रभाव पड़ा है। यह भारत में विभिन्न सामाजिक समस्याओं का मूल कारण है। एक समस्या के रूप में जातिवाद से एक जाति का दूसरी जाति से भेदभाव उत्पन्न होता है और सर्वहितवाद के सिद्धांत का उल्लंघन करके एक जाति के लोगों द्वारा अपनी जाति के लोगों का पक्ष लेने की विशिष्टतापरक प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। जाति के आधार पर सामाजिक-राजनीतिक हैसियत प्राप्त करने की प्रथा और जाति को ध्यान में रखकर शिक्षा और रोज़गार के मामले में पक्ष लेना और विरोध करना जाति की प्रमुख विशेषताएँ हैं। भारत की सामाजिक स्थिति के अंतर्गत कमजोर वर्गों के लिए उठाए गए कल्याणकारी कार्यक्रमों के लिए कोई भी जाति का मानदण्ड अपनाने का औचित्य ठहरा सकता है। साथ ही ऐसे कल्याणकारी उपायों से तनाव और विवाद उत्पन्न हुए हैं जिससे कि जातिवादी प्रवृत्तियाँ उजागर हुई हैं।

जाति प्रणाली से भारत में शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। पारंपरिक रूप से जाति ने शिक्षा के लिए लोगों की योग्यता को निर्धारित किया। पारंपरिक प्रणाली के अंतर्गत शिक्षा, ऊंची जातियों का ही परम अधिकार मानी जाती थी। इस परंपरा के अंतर्गत ज्ञान को ऊंची जातियों तक ही सीमित कर देने के दुराग्रह से जन सामान्य को शिक्षा नहीं मिल पाई। यह भारत में बड़े पैमाने पर निरक्षरता की समसया के कारणों में से एक है।

3.4.3 भाषा

भारतीय समाज का दूसरा पहलू यह है कि उसमें बहुत सी भाषाएँ बोली जाती हैं जिससे भिन्न-भिन्न भाषायी समुदायों के बीच प्रायः विवाद उत्पन्न होता है। भारत ने भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन करके सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ को स्वीकार कर लिया है जिससे भाषायी पहचान बनाने का प्रोत्साहन मिला है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि एक राष्ट्र के रूप में भारत एक ऐसी राष्ट्रभाषा अपनाने में असमर्थ रहा है जो सभी को स्वीकार्य

हो और जो संपर्क भाषा के रूप में प्रभावी ढंग से कार्य कर सके। ऐतिहासिक कारणों से उच्च शिक्षा, प्रशासन और कूटनीति के लिए अंग्रेजी अभी भी, संपर्क भाषा के रूप में बनी हुई है। इस संदर्भ में इसका संबंध दो स्तरो पर है :

- राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेज़ी और हिंदी के संबंध का प्रश्न है, और
- राज्य स्तर पर अंग्रेज़ी, हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के संबंध का प्रश्न है।

इस विशिष्ट भाषायी स्वरूप से उत्पन्न स्थिति ने बहुत से राज्यों के बीच सीमा विवादों और शैक्षिक संस्थाओं में शिक्षण के माध्यम के प्रश्न जैसी समस्याओं को उत्पन्न किया है। इन सभी मुद्दों से राष्ट्रीय एकता पर बुरा प्रभाव पड़ा है। इनसे तनाव और विवाद उत्पन्न हुए हैं।

3.4.4 जनजातियाँ

भारत, जनजातियों की बड़ी आबादी वाला देश है। भारत में जनजातियों का समाज एक समान नहीं है। वे जीवन पद्धति, बाहरी दुनिया से संपर्क कल्याण और विकास कार्यक्रमों को अपनाने की दृष्टि से बिल्कुल भिन्न हैं। जनजातियों को एक लम्बे अरसे से भारतीय समाज की मुख्यधारा से अलग रखा गया है जो कि उनके पिछड़ेपन का कारण है। इसके अलावा उन गैर-जनजातियों ने विभिन्न प्रकार से उनका शोषण किया जिनके वे संपर्क में आए हैं। एक तरफ गैर-जनजाति के लोगों ने आर्थिक उपलब्धि के लिए जनजातियों का शोषण किया, दूसरी तरफ वे विजनजातीयकरण की समस्या का सामना कर रहे हैं जिससे जनजातीय संस्कृति और जीवन-पद्धति के खो देने या उसका ह्रास होने की समस्या उत्पन्न होती है। इस संदर्भ में भारत की जनजातियों की मुख्य समस्या पिछड़ापन, शोषण, विजनजातीयकरण, जातीय तनाव, विभिन्न प्रकार के जनजातीय आंदोलन तथा भारत के कतिपय भागों में जनजातियों के बागी हो जाने की है।

3.4.5 अल्पसंख्यक

भारतीय समाज में व्याप्त विषमता से भारत में अल्पसंख्यकों की समस्या उत्पन्न हुई है। भारत में पहचाने गए प्रमुख अल्पसंख्यक समाज, धार्मिक और भाषायी हैं। धार्मिक अल्पसंख्यकों की समस्या राष्ट्रीय स्तर पर मानी जा सकती है तथा भाषायी अल्पसंख्यकों की प्रासंगिकता राज्य स्तर पर है। धार्मिक और भाषायी अल्पसंख्यकों के अलावा जातीय गैर जनजातीय समाज भी, परिस्थिति विशेष में एक समाज का दूसरे समाज से पारस्परिक संबंधों के संदर्भ में अल्पसंख्यक समाज का दर्जा पा सकते हैं।

3.4.6 जनसंख्या विस्फोट

भारत में समस्याओं को उत्पन्न करने वाला अन्य सामाजिक कारक, जनसंख्या विस्फोट है। भारत में जनसंख्या इस शताब्दी के दौरान खूब बढ़ी है। आम लोगों के लिए विकास और कल्याण कार्यक्रम, बढ़ती हुई जनसंख्या के अनुपात में लोगों तक नहीं पहुँच पाए हैं। परिणामस्वरूप जन-सामान्य, जिनकी संख्या लगातार बढ़ रही है, को विकास कार्यक्रमों से मिले लाभ संभावना से बहुत नीचे रहे हैं।

जनसंख्या में वृद्धि होने से भारत में गरीबी, बेरोज़गारी और निरक्षरता की समस्या और गहरी हुई है। यह एक सच्चाई है कि इन समस्याओं से प्रभावित होने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। जनसंख्या का एकदम बड़ा आकार भी एक ऐसा कारक है जो विभिन्न प्रकार की बढ़ती हुई समस्याओं के लिए जिम्मेदार होता है। जाति या जनजाति का आकार

जितना बड़ा होगा, राष्ट्रीय एकता के दाव पर अपनी संकीर्ण या जातीय पहचान को जोरदार ढंग से व्यक्त करने की प्रवृत्ति उतनी ही बड़ी होगी।

भारत में पर्याप्त संख्या में शारीरिक रूप से विकलांग भी हैं। वे जीवित रहने का लिए समाज पर पूर्णतया आश्रित हैं। देश में इतनी अधिक संस्थाएँ नहीं है कि शारीरिक रूप से विकलांग लोगों को विभिन्न आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जा सके। उनमें से तो बहुत से भिखारी बनकर सड़कों पर भीख माँगने लग जाते हैं जो कि एक अन्य सामाजिक समस्या है।

भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या से जमीन, पूँजी और जंगल के संसाधनों के लिए माँग बढ़ रही है। बढ़ती हुई जनसंख्या से ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में, जमीन की भूख बढ़ती जा रही है। राष्ट्रीय वित्त व्यवस्था पर बढ़ते हुए बोझ के कारण शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार, ग्रामीण विकास, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, पिछड़ी जातियों, युवाओं और महिलाओं आदि के कल्याण जैसे कल्याणकारी कार्यक्रमों और सामाजिक सेवाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। ईंधन और इमारती लकड़ी की आवश्यकता तथा फसल उपजाने एवं रहने के लिए ज़मीन की भूख, धीरे-धीरे वन संपदा समाप्त करती जा रही है। वन क्षेत्रों को धीरे-धीरे अनवरत वनों के उजड़ने से उत्पन्न पारिस्थितिकीय असंतुलन के प्रतिकूल प्रभाव - वर्षा की बदलती हुई स्थिति, बढ़ते हुए भू-रक्षण, बाढ़, पशुओं के लिए चारे और गरीब लोगों के लिए जलाने की लकड़ी की भारी कमी के रूप में स्पष्टतः दिखाई देते हैं।

कोष्ठक 3.01

भारत में राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में जनसंख्या, वृद्धि, लिंग अनुपात, घनत्व और साक्षरता दर

राज्य / संघ शासित प्रदेश	आबादी	वृद्धि दर 1991-01	सेक्स अनुपात	घनत्व	साक्षरता दर		
					कुल	पुरुष	महिला
भारत	1,027,015,247	21.34	933	324	65.37	75.85	54.16
जम्मू एवं कश्मीर	10,069,917	29.04	900	99	54.46	65.75	41.82
हिमाचल प्रदेश	6,007,248	17.53	970	103	77.13	86.02	68.8
पंजाब	24,289,296	19.76	874	482	69.95	75.63	63.55
चण्डीगढ़	900,914	40.33	773	7,903	81.76	85.65	76.65
उत्तरांचल	8,479,562	19.20	964	159	72.28	84.01	60.26
हरियाणा	21,082,989	28.06	861	477	68.59	79.25	56.31
दिल्ली	13,782,957	46.31	821	9294	81.82	87.37	75.0
राजस्थान	56,473,112	28.33	922	165	61.03	76.46	44.34
उत्तर प्रदेश	1,66,052,859	25.80	898	389	57.36	70.23	42.9
बिहार	82,878,796	28.43	921	880	47.53	60.32	33.6
सिक्किम	540,493	32.98	875	76	69.68	76.73	61.49
अरूणाचल प्रदेश	1,091,117	26.21	901	13	54.74	69.07	44.24
नागालैंड	1,988,636	64.41	909	120	67.11	71.77	61.92
मणिपुर	2,388,634	30.02	978	107	68.87	77.87	59.7
मिजोरम	891,058	29.18	938	42	88.49	90.6	86.0

मेघालय	2,306,069	29.94	975	103	63.31	66.14	60.41
असम	26,638,407	18.85	932	340	64.28	71.9	56.30
पश्चिम बंगाल	80,221,171	17.84	934	904	69.22	77.58	60.22
झारखंड	26,909,428	23.19	941	338	54.13	67.9	39.4
उड़ीसा	36,706,920	15.94	972	236	63.61	76.0	51.0
छत्तीसगढ़	20,795,956	18.06	990	154	65.2	77.8	52.4
मध्य प्रदेश	60,385,118	24.34	620	158	64.09	76.7	50.3
गुजरात	50,596,992	22.48	921	258	69.97	80.50	58.60
दमन एवं द्वीव	158,059	55.59	709	1411	81.1	88.4	70.4
दादर नागर हवेली	220,451	59.20	811	449	60.3	76.3	43.0
महाराष्ट्र	96,752,247	22.57	922	314	77.27	86.27	67.5
आंध्र प्रदेश	75,727,541	13.86	978	275	61.11	70.85	51.17
कर्नाटक	52,733,958	17.25	964	275	67.04	76.3	57.49
गोवा	1,343,998	14.89	960	363	82.32	88.9	75.5
लक्ष्यद्वीप	60,595	17.19	947	1894	87.52	93.1	81.5
केरला	31,838,619	9.42	1058	819	91.0	94.2	87.8
तमिलनाडु	62,110,839	11.19	986	478	73.5	82.3	64.5
पांडिचेरी	973,829	20.56	1001	2029	81.5	89.0	74.0
अंडमान निकोबार	356,265	26.94	846	43	81.2	86.0	75.3
त्रिपुरा	3,191,168	15.74	950	304	73.66	81.47	65.4

स्रोत : भारतीय जनगणना, 2001

बोध प्रश्न 2

i) धर्म और राजनीति पर चार पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

ii) चार पंक्तियों में जाति और शिक्षा के बीच संबंध का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

iii) केंद्र और राज्य स्तर पर भाषा की समस्या पर चार पंक्तियों में विवेचन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

iv) क) जनजातियों और ख) अल्पसंख्यकों की समस्याओं का उल्लेख तीन-तीन पंक्तियों में कीजिए।

क) .....

.....

.....

ख) .....

.....

.....

v) जनसंख्या दबाव के पाँच प्रमुख परिणामों का उल्लेख कीजिए।

क) .....

ख) .....

ग) .....

घ) .....

च) .....

3.5 सांस्कृतिक तत्व

भारत में कतिपय सांस्कृतिक तत्व ऐसे हैं जिन्होंने भारत में कुछ सामाजिक समस्याओं के बने रहने में खास योगदान किया है। इस संदर्भ में निम्नलिखित सांस्कृतिक विशेषताएँ विशेष तौर पर देखी जा सकती हैं :

- भाग्यवाद,
- विशिष्टतावाद,
- सार्वजनिक सपंत्ति के प्रति दृष्टिकोण,
- पितृसत्तात्मक व्यवस्था।

3.5.1 भाग्यवाद

भारत में सामाजिक समस्याओं से जुड़ा रहने वाला एक सांस्कृतिक तत्व भाग्यवाद है। "कर्म" और पुनर्जन्म के सिद्धांत में जीवन के प्रति भाग्यवादी प्रवृत्ति के मजबूत तत्व हैं – एक

ऐसी प्रवृत्ति जो जीवन में असफलता को भाग्य एवं कर्म के फल के रूप में स्वीकार करती है। भाग्य और कर्म का सिद्धांत अन्याय और शोषण के विरुद्ध जन सामान्य के प्रतिरोध को रोकने का एक तरीका सिद्ध हुआ है। छुआछूत, भेदभाव, बंधुआ मज़दूर जैसी कुप्रथाएँ लंबे समय तक भारत में रही हैं। उनके बने रहने के बारे में और इनसे प्रभावित लोगों ने इन्हें कोई चुनौती नहीं दी। ऐसा इसलिए हुआ कि प्रभावित लोगों ने इन प्रथाओं को अपने पिछले जन्म के कर्मों और भाग्य का फल माना। कल्याण और विकास कार्यक्रम, धर्मनिष्ठ भाग्यवाद में विश्वास करने वाले जन सामान्य की उदासीनता और भेदभाव के कारण ऐसी स्थिति में पीछे रह जाता है।

3.5.2 विशिष्टतावाद

भारतीय समाज में बड़े पैमाने पर पाई जाने वाली दूसरी सांस्कृतिक विशेषता, सर्वहितवाद के विरुद्ध विशिष्टतावाद है। यह अपने लोगों, अपने संबंधियों, अपनी जाति या धर्म के लोगों के लिए अत्यधिक ध्यान रखने की अवधारणा में झलकता है। प्रायः अपने निर्णय व कार्यों में सर्वहितवाद का मानव अलग-थलग रख दिया जाता है। हमारे समाज में चल रहे पक्षपात या भेदभाव जैसा भ्रष्टाचार सर्वहितवाद के मानदंडों के प्रति उपेक्षा के परिणाम है। जाति, जनजाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र के आधार पर एक समाज का दूसरे समाज से कुछ आपसी विवाद भी अपनी-अपनी अलग पहचान बनाने और अपने को विशिष्ट मानने के आधार पर सामाजिक राजनीतिक हैसियत प्राप्त किए जाने की कोशिशों के कारण उत्पन्न हुए हैं।

3.5.3 सार्वजनिक संपत्ति के प्रति दृष्टिकोण

भारतीय समाज की दूसरी विशेषता, जिसका संबंध भ्रष्टाचार से है, सार्वजनिक संपत्ति और धन के प्रति उपेक्षा का भाव रखना है। ऐसा विश्वास है कि भारतीयों को यह औपनिवेशिक शासन की विरासत में मिला है। दुर्भाग्यवश भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी यह प्रवृत्ति अभी भी बनी हुई प्रतीत होती है। सार्वजनिक संपत्ति के प्रति इस प्रकार ध्यान न देना ही भ्रष्टाचार, काला धन, कर-चोरी, सार्वजनिक वस्तुओं के दुरुपयोग और सार्वजनिक निर्माण में निम्न कोटि की सामग्री के इस्तेमाल का एक मूल कारण है।

3.5.4 पितृसत्तात्मक व्यवस्था

जैसा कि विश्व में अन्यत्र भी है, भारतीय समाज के बहुत से समाजों में कुल मिलाकर पितृसत्तात्मक व्यवस्था रही है जिसमें पुरुष का प्रभुत्व होता है। भारतीय समाज में महिला की भूमिका की संकल्पना पत्नी और माँ के रूप में ही रही है। भारत में महिला की सामाजिक परिस्थिति पुरुष की तुलना में हीन मानी जाती रही है।

यह समस्या सांस्कृतिक आवश्यकताओं के कारण और भी गहरी हो जाती है। यह मानकर चला जाता है कि लड़का परिवार की वंश परंपरा को आगे चलाएगा और मृत्यु होने के बाद धार्मिक अनुष्ठान भी वही पूरा करेगा। इस धारणा ने लड़कों के लिए सांस्कृतिक रूप से तरजीह दी है और लड़की को निम्न दर्जा दिया है तथा उसे एक बोझ माना है। इससे महिलाएँ पुरुष की आधीनता का शिकार हुई हैं और सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके खिलाफ भेदभाव बरता जाता है। दहेज, बहू के साथ दुर्व्यवहार, पत्नियों को मारना-पीटना, निरक्षरता, व्यवसायगत भेदभाव, सामाजिक अलगाव और मनोवैज्ञानिक रूप से आश्रित होना आदि जिन समस्याओं का सामना महिलाओं को करना पड़ता है, उनका मूल कारण लड़के को वरीयता दिए जाने की अवधारणा में निहित है।

3.6 अर्थव्यवस्था, गरीबी और शिक्षा

आर्थिक रूप से भारत एक ऐसा देश रहा है, जहाँ कृषक समाज की प्रधानता रही है। स्वाभाविक रूप से मजदूर वर्ग की कृषि पर निर्भरता अधिक है। अल्प विकसित कृषि पर मजदूर वर्ग की इस प्रकार की अत्यधिक निर्भरता भारत में सामाजिक समस्याओं में से प्रमुख कारण हैं। इससे प्रत्यक्ष तौर पर गरीबी बढ़ती है जो कि भारत में बहुत-सी अन्य सामाजिक समस्याओं के मूल कारणों में एक है। कुपोषण, खराब स्वास्थ्य, भिक्षावृत्ति, वेश्यावृत्ति आदि का मूल कारण भारत में बड़े पैमाने पर गरीबी ही है।

भारतीय समाज में संपत्ति का असमान बँटवारा है। भारत के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में व्याप्त गरीबी के बीच समृद्ध लोग भी रहते हैं। इस असमानता के कारण विकास और कल्याण सेवाओं के लाभ भी समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों को असमान रूप से प्राप्त होते हैं। परिणामस्वरूप, बड़ी संख्या में गरीबों में तथा समाज के पिछड़े वर्गों में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। अर्थव्यवस्था, गरीबी और शिक्षा के बीच गहरा संबंध है। भारत में निरक्षरता का सीधा संबंध गरीबी से है। उच्च शिक्षा में अनियोजित वृद्धि से शिक्षित बेरोज़गारी की समस्या हुई है।

भारत में मानव विकास के कुछ पहलू

भारत उन देशों में से एक देश है जिसका मानव विकास सूचकांक में निम्न स्थान है। भारत के मानव विकास सूचकांक (2000) के कुछ पहलू नीचे दिए गए हैं :

कोष्ठक 3.02

	मानव विकास सूचकांक	आयु
1)	जन्म के वर्षों में जीवन प्रत्याशा	63.3 वर्ष
2)	प्रौढ़ साक्षरता (15 वर्ष और उससे अधिक)	57.2 प्रतिशत
3)	संयुक्त नामांकन दर	55 प्रतिशत
4)	संशोधित पेय जल संसाधनों का प्रयोग नहीं करने वाली जनसंख्या का प्रतिशत	12 प्रतिशत
5)	पाँच वर्ष से कम आयु के अल्प वज़न वाले बच्चों का प्रतिशत	47 प्रतिशत
6)	राष्ट्रीय गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले लोगों का प्रतिशत	35.0 प्रतिशत
7)	वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर	1.9 प्रतिशत
8)	शहरी जनसंख्या का प्रतिशत	27.7 प्रतिशत
9)	जनसंख्या जो पर्याप्त स्वच्छता सुविधाओं का प्रयोग नहीं करती	69 प्रतिशत
10)	कम वजन के बच्चे (पाँच वर्ष से कम)	47 प्रतिशत
11)	एच.आई.वी./एड्स में जीवनयापन कर रहे व्यक्ति	0.79 प्रतिशत

स्रोत : यू एन डी पी, 2003

3.6.1 बाल श्रमिक

बाल श्रमिक, जिससे कि देश में स्पष्टतया गरीबी प्रकट होती है, भारत में एक सामाजिक समस्या बन गए हैं। समाज के गरीब वर्गों के परिवारों की एक बड़ी संख्या अपने बच्चों की कमाई पर निर्भर रहने के लिए मजबूर है। वे ऐसी स्थिति में नहीं होते हैं कि अपने बच्चों को पूर्णकालिक स्कूली पढ़ाई के लिए या अंशकालिक पढ़ाई के लिए भी छोड़ सकें। इस प्रकार से जिन बच्चों की आयु स्कूल में पढ़ाई करने की होती है, वे मज़दूर के रूप में काम करते पाए जाते हैं।

कार्यरत बच्चों के परिवारों की आर्थिक मज़बूरियों के अलावा लघु उद्योगों को लगाने वाले कुछ मालिक भी बाल श्रमिकों को काम पर लगाने के लिए वरीयता देते हैं। उनके लिए बाल श्रमिक सस्ते पड़ते हैं, इससे उत्पादन की लागत में कमी आती है और लाभ अधिक से अधिक होता है। इस प्रकार से बाल श्रमिकों को उनके माँ-बाप और उद्योगों के मालिकों दोनों ही के द्वारा प्रोत्साहन मिलता है। अतः भयंकर परिस्थितियों के अंतर्गत बच्चों के काम करने और कम मज़दूरी पाने के बावजूद, भारत में बाल श्रमिक फलते-फूलते हैं।

अभ्यास 1

कृपया अपने आसपास रहने वाले दस परिवारों की मासिक आय और उसके स्रोतों के आधार पर दो पृष्ठों की एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

3.6.2 निरक्षरता और शिक्षा

व्यापक पैमाने पर गरीबी का कुप्रभाव भारत में शिक्षा पर भी पड़ा है। देश में व्यापक स्तर पर निरक्षरता की समस्या, गरीबी की उस स्थिति का एक बड़ा परिणाम है जिसमें जन-सामान्य रहते हैं। गरीब लोग अपने जीवन-निर्वाह के लिए पहले से ही इतने दबे और चिंतित रहते हैं कि शिक्षा के प्रति उनका कोई रुझान ही नहीं होता है या समय ही नहीं मिल पाता है। गरीब व्यक्ति जब सुबह-शाम की रोटी का जुगाड़ करने के लिए संघर्ष कर रहा है तो उसे शिक्षा के मूल्यों के बारे में समझाना ही हास्यास्पद है। गरीब वर्ग के अधिकांश लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजने तक को तैयार नहीं होते। जो लोग अपने बच्चों को स्कूल में दाखिल करवा देते हैं उनमें से अधिकांश लोग अपने बच्चों को साक्षरता के किसी सार्थक मानक स्तर पर पहुंचने से पहले ही स्कूल भेजना बंद कर देते हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि भारत को व्यापक निरक्षरता की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। साक्षरता प्राप्त करने में सक्षम देश की जनसंख्या के लगभग 50 प्रतिशत लोग अभी भी निरक्षर हैं।

3.6.3 शिक्षा प्रणाली

शिक्षा प्रणाली समाज को विभिन्न तरीके से व्यापक स्तर पर प्रभावित करती है। भारत में उच्च स्तर पर शिक्षा का अंधाधुंध विस्तार, सामाजिक माँगों और राजनीतिक दबावों के कारण हुआ है। भारत में शिक्षा प्रणाली की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं :

- व्यापक निरक्षरता,
- शिक्षा के सर्वसुलभीकरण के अप्राप्त लक्ष्य,
- प्राथमिक शिक्षा पर समुचित बल न दिया जाना,
- उच्च शिक्षा पर अनुचित जोर जो कि कुल मिलाकर प्रविधि, प्रबंधन, चिकित्सा संस्थानों और बड़े शहरों के कुछ कालेजों एवं विश्वविद्यालयों को छोड़कर गुणवत्ता की दृष्टि में स्तरीय नहीं है।

परिणामस्वरूप, यह देखने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया कि शिक्षा प्रणाली ने उच्च स्तर पर जिन शिक्षितों को जिस गुणवत्ता और संख्या में तैयार किया, वे देश की आर्थिक प्रणाली में खप न सके। इस अनियोजित विस्तार का कुल परिणाम यह रहा कि शिक्षित बेरोज़गारी और अल्प रोज़गारी में वृद्धि होती रही है। यह स्थिति स्पष्टतः ही आर्थिक प्रणाली की माँग से अधिक शिक्षितों को पैदा करने अथवा शिक्षा और अर्थव्यवस्था के बीच तालमेल न होने के कारण है।

भारत में अर्थव्यवस्था और शिक्षा के बीच तालमेल न होने का अन्य प्रकार भी है। यह ऐसी स्थिति है जिसमें भारत में कुछ शिक्षा संस्थाओं द्वारा पैदा किए गए कुछ उच्च योग्यता प्राप्त शिक्षितों को देश में अनेक अनुकूल पद नहीं मिल पाता है। परिणाम "प्रतिभा पलायन" होता है और भारत, सार्वजनिक संसाधनों की अत्यंत भारी कीमत पर उच्च योग्यता प्राप्त शिक्षितों की सर्वोत्तम श्रेणी को खो देता है।

3.6.4 औद्योगीकरण और शहरीकरण

भारत में औद्योगीकरण और शहरीकरण की प्रक्रिया धीमी रही है। औद्योगीकरण देश के कुछ ही भागों में हुआ है। परिणाम यह हुआ कि कुछ शहरों की जनसंख्या में बेहद वृद्धि हुई। कुछ शहरों में जनसंख्या में इस बेहद वृद्धि से शहरी गरीबी, बेरोज़गारी, भीड़-भाड़, प्रदूषण, मलीन बस्तियाँ आदि जैसी विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।

ग्रामीण गरीबी और बेरोज़गारी ने शहरी समस्या को और भी बढ़ाया है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में आने वाले लोगों की संख्या इतनी अधिक थी कि शहरी क्षेत्र उन्हें पूरी तरह खपा नहीं सकते थे। चूँकि ग्रामीण क्षेत्रों से आने वालों की एक बड़ी संख्या निरक्षरों और अकुशल कामगारों की होती है, इसलिए वे अपने को शहरी आर्थिक स्थिति के अनुसार ढाल नहीं पाते हैं जिसके कारण वे बेरोज़गारी और गरीबी से ग्रस्त हो जाते हैं और कुछ असहाय स्त्रियों को अपनी जीविका के लिए मजबूरन वेश्यावृत्ति अपनानी पड़ती है। इस प्रकार से जहाँ एक और शहरीकरण और औद्योगीकरण की प्रक्रिया, विकास का लक्षण होती है, वहीं दूसरी ओर भारत में इसका अपना प्रतिकूल पहलू भी है जो कि सामाजिक समस्याओं के रूप में उभरती है।

3.7 राज्य और राज्य व्यवस्था

भारत में सामाजिक समस्याओं को रोकने या उनका समाधान पाने के लिए राज्य का हस्तक्षेप बहुत महत्वपूर्ण रहा है। औपनिवेशिक काल के प्रारंभ में सती प्रथा (1829) को मिटाने तथा ठगी पर नियंत्रण लगाने के लिए राज्य द्वारा कई कदम उठाए गए। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अंतर्सामुदायिक और अंतर्जातीय विवाह के लिए कानूनी अवसर प्रदान करने हेतु कई कदम उठाए गए। बाल विवाह को रोकने के लिए (1929) में "शारदा एक्ट" पारित किया गया। स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत ने एक लोकतांत्रिक, संप्रभुतासंपन्न, धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी समाज गठित करने का संकल्प लिया। संविधान में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, पिछड़े वर्गों, महिलाओं और बच्चों के हितों की सुरक्षा के लिए विशेष प्रावधान किए गए।

छुआछूत की प्रथा को एक अपराध घोषित किया गया। हिंदू समाज में सामान्य तौर पर और "हिंदू विवाह प्रथा" में विशेष तौर पर सुधार किए जाने के लिए हिंदू विवाह अधिनियम और हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम जैसे कुछ विशेष उपाय अपनाए गए। युवाओं, बच्चों और सामान्य रूप से विकलांग व्यक्तियों के लिए कल्याण कार्यक्रम चलाए गए। भारतीय समाज

में सामाजिक-आर्थिक बदलाव लाने के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ चलाई गईं। 1970 के बाद गरीबी हटाने, ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम विकास और रोज़गार सृजन के लिए विशेष ध्यान दिया गया।

इन कार्यक्रमों का प्रभाव भारत के लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन पर दिखाई देता है। पर्याप्त उपलब्धियों के बावजूद भारत अभी भी गरीबी, बेरोज़गारी और भारतीय समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग तंगहाली की जिंदगी जीने जैसे बहुत सी समस्याओं से ग्रस्त है। स्वातंत्र्योत्तर काल में भारतीय राजनीति और निर्वाचन प्रक्रिया द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण भी हमारी बहुत सी सामाजिक समस्याओं के लिए उत्तरदायी है।

3.7.1 निर्वाचन प्रक्रिया

राजनीतिक दृष्टि से भारत में बहुदलीय प्रणाली है और संसदीय लोकतंत्र है। आदर्शतः राजनीतिक दलों का गठन सर्वहितवाद की विचारधारा पर होता है और नागरिकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे सर्वहितवाद के सिद्धांत पर अपने प्रतिनिधियों को चुनेंगे। किंतु वास्तव में विशिष्टतावादी प्रवृत्तियाँ, देश की निर्वाचन प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी को भी इस बात का पता चल सकता है कि राजनीतिक दल, संप्रदाय अथवा क्षेत्रीय संकीर्णता के आधार पर बनते हैं और राजनीतिक दलों तथा व्यक्तियों द्वारा जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के आधार पर राजनीतिक लामबंदी की जाती है। इस प्रकार के राजनीतिक क्रियाकलाप, स्वस्थ लोकतंत्रीय राज्य व्यवस्था का नकार है। इससे अलगाववादी संघर्ष भी होता है और कमज़ोर वर्गों एवं भाषायी तथा धार्मिक अल्पसंख्यकों के प्रति अत्याचार भी बढ़ता है। इस प्रकार से वर्तमान स्वरूप की राजनीतिक कार्य-शैली तथा निर्वाचन प्रक्रिया संप्रदायवाद, जातिवाद, और समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच संघर्षों की समस्याओं को जन्म दे रही है।

3.8 सारांश

इस इकाई में सर्वप्रथम सामाजिक रूपांतरण और सामाजिक समस्याओं के बीच संबंध पर चर्चा की गई है। भारतीय संदर्भ में सामाजिक रूपांतरण की प्रक्रिया को ऐतिहासिक और ढाँचागत पहलुओं की दृष्टि से स्पष्ट किया गया है। इसके बाद सामाजिक कारकों और सामाजिक समस्याओं, सांस्कृतिक तत्वों और सांस्कृतिक समस्याओं, अर्थव्यवस्था, राज्य-व्यवस्था और सामाजिक समस्याओं के बीच संबंधों की परख की गई है। अंत में हमने इन समस्याओं तथा भारतीय राज्य-व्यवस्था की वास्तविक कार्य शैली से उत्पन्न समस्याओं से निपटने के लिए राज्य की भूमिका पर चर्चा की है।

3.9 शब्दावली

संरचनात्मक पतन : इस संकल्पना का प्रयोग टालकॉट पारसन ने किया है जिसका मतलब है – एक ऐसी कठोर प्रणाली, जिसके अंतर्गत सामाजिक रूपांतरण का प्रतिरोध करने या उसमें बाधा डालने के लिए प्रयास किया जाता है और इसके फलस्वरूप सामाजिक ढाँचे में खराबी उत्पन्न होती है। प्रणालीजन्य कठोरता के विरुद्ध लोगों द्वारा सामूहिक प्रयास के रूप में उठाए गए कदमों को मार्क्सवादियों ने "क्रांति" की संज्ञा दी है।

संरचनात्मक विसंगतियाँ : इस संकल्पना का अभिप्राय यह है कि एक ही ढाँचे के अंतर्गत दो विपरीत उप-ढाँचे का होना जो कि एक-दूसरे से असंगत होते हैं।

नरम राज्य : इस संकल्पना का प्रयोग गुन्नार मिर्डाल ने अपनी पुस्तक "एशियन ड्रामा : एन एन्क्वायरी इन टू दि पावर्टी ऑफ नेशन्स" में किया है। इस संकल्पना से उनका अभिप्राय नव स्वतंत्र एशियाई राज्यों की ऐसी कार्य शैली से है जिससे इन राज्यों को देश के कानून को लागू करने के लिए कठिन निर्णय लेना मुश्किल होता है।

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) क) जातिगत श्रेष्ठता, धार्मिक कर्मकाण्डों पर अत्यधिक जोर, कठोर उच्च परंपरा, पुरोहितों की उच्च स्थिति, पशु बलि।

ख) उपेक्षा, अंधविश्वास की प्रवृत्ति, शुद्धता और अपवित्रता की गहरी धारणा छुआछूत, बाल-विवाह, महिलाओं की निम्न स्थिति, विधवा को विधवा की ही तरह जीने का कड़ाई से पालन।

ग) सती, विधवापन, बाल विवाह, निरक्षरता, छुआछूत, ठगी, अंधविश्वास।

घ) संप्रदायवाद, छुआछूत, जनसंख्या विस्फोट, कमजोर वर्गों की समस्याएँ, शराब एवं नशीले पदार्थों का सेवन, गरीबी, बेरोज़गारी, काला धन, अपराध, अपचार और हिंसा।

ii) आर्य समाज, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज और रामकृष्ण मिशन।

iii) क) संस्कृतिकरण

ख) पश्चिमीकरण

ग) आधुनिकीकरण

बोध प्रश्न 2

i) भारतीय समाज बहु-धार्मिक समाज है। औपनिवेशिक काल में विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच विशेषकर हिंदुओं और मुसलमानों के बीच संबंधों को राजनीतिक रंग दे दिया गया था। इससे संप्रदायवाद नाम की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला जो कि आपसी संदेहों, सांप्रदायिक विचारधाराओं, सत्ता, सेवा और संसाधनों के लिए स्पर्धा के कारण और भी मजबूत हुई है।

ii) पारंपरिक भारतीय प्रणाली के अंतर्गत शिक्षा, मुख्यतया ऊंची जातियों तक सीमित हुआ करती थी। इससे बड़े पैमाने पर प्रत्येक के लिए शिक्षा का प्रसार न हो सका। यह भारत में व्यापक स्तर पर फैली निरक्षरता के कारणों में से एक है।

iii) भारत में उच्च शिक्षा, प्रशासन और कूटनीतिक के लिए अंग्रेज़ी संपर्क भाषा के रूप में बनी रही। शिक्षण के माध्यम एवं प्रशासन के लिए केंद्र स्तर पर अंग्रेज़ी और हिंदी के बीच संबंध का प्रश्न है और राज्य स्तर पर प्रश्न अंग्रेज़ी, हिंदी और क्षेत्रीय भाषा के बीच है।

iv) क) भारत में अनेक जन-जातियाँ हैं और वे भारत की जनसंख्या का लगभग सात प्रतिशत है। वे अपने रीति-रिवाजों के अनुसार बिल्कुल भिन्न होते हैं। उन्हें अलग-थलग रखा जाता है और उनका शोषण किया जाता है। वे विजनजातीयकरण की समस्या का सामना भी कर रहे हैं।

ख) भारत में धार्मिक और भाषायी अल्पसंख्यक रहते हैं। कभी-कभार जातियों और जनजातियों को भी निर्दिष्ट क्षेत्रों के अंतर्गत अल्पसंख्यक के रूप में माना जाता है।

v) क) विकास और कल्याण कार्यक्रमों पर प्रतिकूल प्रभाव,

ख) गरीबी,

ग) निरक्षरत,

घ) जमीन, पूँजी, जंगल और अन्य संसाधनों पर बढ़ता हुआ दबाव,

बोध प्रश्न 3

i) क) अपने संबंधियों, जाति और जनजाति या धर्म के लोगों को अत्यधिक महत्व देना।

ख) पक्षता से जुड़ा हुआ भ्रष्टाचार,

ग) भेदभाव,

घ) विभिन्न समूहों का आपसी संपर्क।

ii) सार्वजनिक संपत्ति के प्रति इस प्रकार से ध्यान न देना ही भ्रष्टाचार, काला धन, कर-चोरी, सार्वजनिक संपत्ति का दुरुपयोग और सार्वजनिक निर्माण कार्य में घटिया स्तर की सामग्री के इस्तेमाल का मूल कारण।

iii) अर्थव्यवस्था, गरीबी और शिक्षा के बीच एक गहरा संबंध है। भारत में निरक्षरता की समस्या गरीबी से सीधे जुड़ी हुई है। भारतीय संदर्भ में अर्थव्यवस्था और शिक्षा के बीच गलत तालमेल है।

iv) वस्तुतः विशिष्टतावादी प्रवृत्तियाँ देश की निर्वाचन-प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बहुत से राजनीतिक दलों का गठन संप्रदायवाद और क्षेत्रवाद के आधार पर हुआ है। निर्वाचन के समय जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार की राजनीतिक लाभबंदी भी भारत में बहुत सी सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के लिए उत्तरदायी हैं।

संदर्भ

राम, 1992 : *सोशल प्रॉब्लम्स इन इंडिया,* रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।

हर्नर एवं गोनयन, 1987: *द स्ट्रक्चर ऑफ सोसियोलाजिकल थ्योरी,* चौथा संस्करण, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।

केनैथ हेनरी, 1978 : *सोशल प्रॉब्लम्स : इंस्टीट्यूशनल एंड ट्यूटर पर्सनल प्रेस्पेक्टिवस,* स्कॉट फोसमैन एंड कं., लंदन।

कोठारी रजनी, 1988 : *ट्रांसफॉरमेशन एंड सरवाइवल : इन सर्च ऑफ ह्यूमन वर्ल्ड ऑर्डर,* अजंता पब्लिकेशंस, दिल्ली।

लर्नर डेनियल, 1964, *द पासिंग ऑफ ट्रेडिशनल सोसाइटी,* द फ्री प्रेस, लंदन।

पोलांकी कार्ल, 1957, *द ग्रेट ट्रांसफॉरमेशन : द पोलिटिकल ऐंड इकोनोमिक थारिजन ऑफ टाइम,* बेकन प्रेस, बास्टन।

मरटोन रॉबर्ट एंड निसबेट रॉबर्ट, 1976 : *कान्टेम्परेरी सोशल प्रॉब्लम्स,* हरकोर्ट बरेस, आरवैनोविच, इन्टरनेशनल एडिटिंग, न्यूयार्क, शिकागो।

योगेन्द्र सिंह, 1988, *मॉडर्नाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रैडिशन,* पुनर्पुद्रण, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।

NOTES